आह्वान

आज कहां से बाला जोगी
अलस सवेरे आया,
मीठी नींद सो रहा था
बरबस झकझोर जगाया।

और कहा- आराम छोड़ दो
सुख-सुविधा का धाम छोड़ दो

चलो हिमालय के अंचल में
झरनों के संग गाओ।

गौरीशंकर के चरणों में
अपना अहम लुटाओ,

कुछ दिन ऊंचाई भी परखो
परसो पारस पत्थर,

मैदानों के वासी निरखो
शिखरों का अभ्यंतर।

सेवा की धूनी में शायद
कलुष खोट जल जाए,

पशुपतिनाथ प्रसन्न पाशुपत
अस्त्र तुम्हें मिल जाए।